श्री सम्मेदशिखराय नमः

श्री तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र सम्मेदशिखर विधान

सम्मेदशिखर विधान का मण्डल

मध्य में - ॐ
प्रथम - 4
द्वितीय - 8
तृतीय - 12
कुल अर्घ-25

रचयिता :

प.पू. क्षमामूर्ति 108 आचार्य श्री विशदसागर जी महाराज

कृति – **श्री तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र सम्मेद शिखर विधान**

कृतिकार – **प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति**
आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

संस्करण – 2022

प्रतियाँ – 1000

संकलन – **मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज**

सहयोग – **आर्यिका श्री भक्तिभारती, क्षुल्लिका श्री वात्सल्य भारती**

संपादन – **ब्र.ज्योतिदीदी(9829076085),आस्था दीदी 9660996425 , सपना दीदी 9829127533, आरती दीदी 87010876822, प्रदीप भैया`7568840873 7568840873**

प्राप्ति स्थल – **1. श्री दिगंबर जैन मंदिर रोहणी से. 3**
9810570747
2. सुरेश सेठी पी शांतिनगर जयपुर
9413336017
3. विशद साहित्य केन्द्र
C/o श्री दिगम्बर जैन मंदिर कुआँ वाला जैनपुरी
रेवाड़ी (हरियाणा) प्रधान-09812502062

मूल्य – पुनः प्रकाशन हेतु 31/- रु. मात्र

:- अर्थ सौजन्य :-

श्री रुपेश कुमार जैन चांदी वाले
ज्ञान निकेतन कमला नगर आगरा उ.प्र.

आराधना के पुष्प

''तमसो मा ज्योतिर्गमय'' जिस प्रकार एक दीपक में प्रकाशित ज्योति घोर अन्धकार को दूर करने में समर्थ होती है उसी तरह पर्वतराज सम्मेद शिखर में बसे पावन तीर्थ की भक्ति से अनन्तानन्त पतितों ने अपने जीवन को पावन बनाया है।

यह त्रिकालवर्ती पर्वतराज सम्मेद शिखर जहाँ से भव्यों ने मोक्ष एवं निर्वाण पद को प्राप्त किया है जिसकी माटी ही इतनी पवित्र है कि लोगों के जीवन में होने वाले असंख्यात दु:खों को क्षण में दूर कर देती है।

ऐसी स्वर्णिम छटा में बिखरे तीर्थ कूटों का भक्तिमय वर्णन **परम पूज्य गुरुदेव क्षमामूर्ति ''साहित्य रत्नाकर'' आचार्य श्री 108 विशद सागर जी महाराज** ने अपनी सरल एवं सुबोध शब्द शैली के द्वारा किया है। परम पूज्य आचार्य श्री के द्वारा अभी तक कई ग्रन्थों का जैसे द्रव्य संग्रह, इष्टोपदेश, रत्नकरण्डकश्रावकाचार सुभाषित रत्नावली आदि का हिन्दी पद्यानुवाद किया गया है। तथा भव्यों को भगवान की भक्ति के सहारे का आलम्बन देते हुए आचार्य श्री ने विघ्नहरण पार्श्वनाथ विधान, भगवान आदिनाथ श्री स्तुति हेतु भक्तामर विधान, पद्मप्रभ, चन्द्रप्रभ, पुष्पदन्त, वासुपूज्य, शान्तिनाथ, मुनिसुव्रत, नेमिनाथ, महावीर विधान, नवदेवता तत्त्वार्थ सूत्र विधान आदि के माध्यम से हमें साक्षात् प्रभु के दर्शन एवं गुणगान का सुअवसर प्रदान किया है। इसी क्रम में यह श्री तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र सम्मेद शिखर विधान की रचना की।

परम पूज्य आचार्य श्री ने जो शब्द संकलन के द्वारा हमें प्रभु के गुणगान का सहारा दिया है। उसके लिए हम उनके सदा ऋणी रहेंगे, पूज्य गुरुदेव इसी तरह भक्ति का सहारा देकर हमें भी अपने समान बना लें, इसी भावना के साथ परम आचार्य श्री के चरणों में शत् शत् कोटि नमोऽस्तु

– ब्र. ज्योति दीदी

संघस्थ आचार्य विशदसागर जी महाराज

सम्मेदशिखर व्रत के 25 व्रत हैं, प्रथम गणधर की टोंक का फिर 24 तीर्थंकर के इस व्रत का फल नाना प्रकार के रोग, शोक, दुःख, संकट को दूर कर सम्पूर्ण मनोरथों को सफल करना है। जो यह व्रत करेंगे, वे सम्मेदशिखर की वंदना के समान अनेकों उपवासों का फल प्राप्त कर परम्परा से मोक्ष को प्राप्त करेंगे।

समुच्चय मंत्र (1) ॐ ह्रीं अर्हं सम्मेदशिखरशाश्वतसिद्धक्षेत्राय नमः। (2) ॐ ह्रीं अर्हं अनंतानंतप्रमसिद्धेभ्यो नमो नमः।

प्रत्येक व्रत के पृथक्-पृथक् मंत्र-

1. ॐ ह्रीं सिद्धवरकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित श्री अजितनाथ तीर्थंकराय नमः।
2. ॐ ह्रीं धवलकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित श्री संभवनाथ तीर्थंकराय नमः।
3. ॐ ह्रीं आनंदकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित श्री अभिनंदननाथ तीर्थंकराय नमः।
4. ॐ ह्रीं अविचलकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित श्री सुमतिनाथ तीर्थंकराय नमः।
5. ॐ ह्रीं मोहनकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित श्री पद्मप्रभनाथ तीर्थंकराय नमः।
6. ॐ ह्रीं प्रभासकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित श्री सुपार्श्वनाथ तीर्थंकराय नमः।
7. ॐ ह्रीं ललितकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित श्री चंद्रप्रभनाथ तीर्थंकराय नमः।
8. ॐ ह्रीं सुप्रभकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित श्री पुष्पदंतनाथ तीर्थंकराय नमः।
9. ॐ ह्रीं विद्युत्वरकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित श्री शीतलनाथ तीर्थंकराय नमः।
10. ॐ ह्रीं संकुलकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित श्री श्रेयांसनाथ तीर्थंकराय नमः।
11. ॐ ह्रीं सुवीरकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित श्री विमलनाथ तीर्थंकराय नमः।
12. ॐ ह्रीं स्वयंभूकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित श्री अनंतनाथ तीर्थंकराय नमः।
13. ॐ ह्रीं सुदत्तकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित श्री धर्मनाथ तीर्थंकराय नमः।
14. ॐ ह्रीं कुंदप्रभकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित श्री शांतिनाथ तीर्थंकराय नमः।
15. ॐ ह्रीं ज्ञानधरकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित श्री कुंथुनाथ तीर्थंकराय नमः।
16. ॐ ह्रीं नाटककूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित श्री अरहनाथ तीर्थंकराय नमः।
17. ॐ ह्रीं संबलकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित श्री मल्लिनाथ तीर्थंकराय नमः।
18. ॐ ह्रीं निर्जरकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित श्री मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकराय नमः।
19. ॐ ह्रीं मित्रधरकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित श्री नमिनाथ तीर्थंकराय नमः।
20. ॐ ह्रीं सुवर्णकूटात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय नमः।
21. ॐ ह्रीं कैलाशपर्वतात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित श्री आदिनाथ तीर्थंकराय नमः।
22. ॐ ह्रीं चंपापुरीक्षेत्रात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित श्री वासुपूज्य तीर्थंकराय नमः।
23. ॐ ह्रीं ऊर्जयंतगिरिक्षेत्रात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित श्री नेमिनाथ तीर्थंकराय नमः।
24. ॐ ह्रीं पावापुरीसरोवरात् सिद्धपदप्राप्तसर्वमुनिसहित श्री महावीर तीर्थंकराय नमः।
25. ॐ ह्रीं वृषभसेनादिगौतमान्त्य-सर्वगणधरचरणेभ्यो नमः।

नोट- तीर्थंकरों के पचंकल्याणक की तिथियों में या अन्य भी विशेष अवसरों पर सम्मेद शिखर मण्डल की रचना कर भक्ति भाव से यह विधान करें। यदि अकेले करना है तो आप कभी भी मण्डल की रचना किए बिना थाली में भी अष्ट द्रव्य से यह विधान सम्पन्न कर सकते हैं।

संकलन- मुनि विशालसागर

जिनेन्द्र-स्नपन-विधि (अभिषेक पाठ)

(हाथ में जल लेकर शुद्धि करें)

शोधये सर्वपात्राणि पूजार्थानऽपि वारिभिः।
समाहितौ यथाम्नाय करोमि सकली क्रियाम्।।

(नीचे लिखा श्लोक पढ़कर जिनेन्द्रदेव के चरणों में पुष्पांजलि क्षेपण करना।)

श्रीमज् जिनेन्द्र- मभि- वन्द्य जगत् त्र्येशं,
स्याद्वाद- नायक- मनन्त- चतुष्टयार्हम्।
श्री- मूलसंघ- सुदृशां सुकृतैक- हेतुर्,
जैनेन्द्र- यज्ञ- विधि- रेष मयाभ्य- धायि।।1।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं भूः स्वाहा स्नपन प्रस्तावनाय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(निम्न श्लोक पढ़कर यज्ञोपवीत, माला, मुदरी, कंगन और मुकुट धारण करना।)

श्रीमन्मन्दर-सुन्दरे शुचि- जलै- र्धौतैः सदर्भाक्षतैः,
पीठे मुक्तिवरं निधाय रचितं त्वत् पाद- पद्म- स्रजः।
इन्द्रोऽहं निज- भूषणार्थक- मिदं यज्ञोपवीतं दधे,
मुद्रा-कङ्कण-शेखराण्यपि तथा जैनाभिषेकोत्सवे।।2।।

ॐ ह्रीं ..... देवाभिषेकोत्सवे/जन्माभिषेकोत्सवे।

श्वेत वर्णे सर्वोपद्रव हारिणि सर्वजन मनोरंजिणि परिधानोत्तरीयं धारिणि हं हं झं झं सं सं तं तं पं पं अहम् इन्द्रोचित परिधानोत्तरीयं आभूषणानि च धारियामि। ॐ नमो परम शान्ताय शान्तिकराय पवित्रीकृतायाहं रत्नत्रय- स्वरूपं यज्ञोपवीतं दधामि। मम गात्रं पवित्रं भवतु अर्हं नमः स्वाहा। (स्वयं पर पुष्प क्षेपण करें।)

(अग्रलिखित श्लोक पढ़कर अनामिका अंगुली से नौ स्थानों (मस्तक, ललाट, कर्ण, कण्ठ, हृदय, नाभि, भुजा, कलाई और पीठ) पर तिलक करें।)

सौगन्ध्य- संगत- मधुव्रत- झङ्कृतेन,
संवर्ण्य- मान- मिव गंध- मनिन्द्य- मादौ।
आरोप- यामि विबु- धेश्वर- वृन्द- वन्द्य-
पादारविन्द- मभिवन्द्य जिनोत्- तमानाम्।।3।।

ॐ ह्रीं परम-पवित्राय नमः नवांगेषु चन्दनानुलेपनं करोमि स्वाहा।

(निम्नलिखि श्लोक पढ़कर भूमि शुद्धि करें)

ये सन्ति केचि- दिह दिव्य कुल प्रसूता,
नागाः प्रभूत- बल- दर्पयुता विबोधाः।
संरक्ष णार्थ- ममृतेन शुभेन तेषां,
प्रक्षाल- यामि पुरतः स्नपनस्य भूमिम्।।4।।

ॐ ह्रीं जलेन भूमिशुद्धिं करोमि स्वाहा।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर पीठ/सिंहासन का प्रक्षालन करना।)

क्षीरार्णवस्य पयसां शुचिभिः प्रवाहैः,
प्रक्षालितं सुरवरैर्-यदनेक- वारम्।
अत्युद्ध- मुद्यत- महं जिन- पादपीठं,
प्रक्षाल- यामि भव-सम्भव- तापहारि।।5।।

ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन पीठ-प्रक्षालनं करोमि स्वाहा।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर सिंहासन पर श्री लिखें।)

श्री- शारदा- सुमुख- निर्गत बीजवर्णं,
श्रीमङ्गलीक- वर- सर्व जनस्य नित्यम्।
श्रीमत् स्वयं क्षयति तस्य विनाश्य- विघ्नं,
श्रीकार- वर्ण- लिखितं जिन- भद्रपीठे।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकार- लेखनं करोमि स्वाहा।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर पीठिका पर श्रीजी विराजमान करें।)

यं पाण्डुकामल- शिलागत- मादिदेव-
मस्नापयन् सुरवराः सुर- शैल- मूर्ध्नि।
कल्याण- मीप्सु- रह- मक्षत- तोय- पुष्पैः,
सम्भावयामि पुर एव तदीय बिम्बम्।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री धर्मतीर्थाधिनाथ! भगवन्निह पाण्डुक शिला-पीठे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा। जगतः सर्वशान्तिं करोतु।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर पल्लवों से सुशोभित मुखवाले स्वस्तिक सहित चार सुन्दर कलश सिंहासन के चारों कोनों पर स्थापित करें।)

सत्पल्ल–वार्चित–मुखान् कलधौत–रौप्य–ताम्रार–कूट–घटितान् पयसा सुपूर्णान्।
संवाह्यतामिव गतांश्चतुरः समुद्रान्, संस्थापयामि कलशाज्जिन–वेदिकांते।।8।।

ॐ ह्रीं स्वस्तये पूर्ण– कलशोद्धरणं करोमि स्वाहा।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर इन्द्रगण अभिषेक करें।)

दूरावनम्र सुरनाथ किरीट कोटी–संलग्न–रत्न–किरणच्छवि–धूस–राघ्रिम्।
प्रस्वेद–ताप–मल मुक्तमपि प्रकृष्टैर्–भक्त्या जलै–र्जिनपतिं बहुधाभिषिञ्चे।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसन्तं वृषभादि– वर्धमानपर्यन्तं– चतुर्विंशति– तीर्थंकर– परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे..... देशे... प्रान्ते.... नाम्नि नगरे श्री 1008 ... जिन चैत्यालयमध्ये वीर निर्वाण सं. ... मासोत्तममासे.... पक्षे... तिथौ.. वासरे.. पौर्वाह्निक /अपराहन्कि समये मुन्यार्यिका– श्रावक–श्राविकानां सकल– कर्म–क्षयार्थं जलेनाभिषिञ्चे नमः।

हमने संसार सरोवर में, अब तक प्रभु गोते खाए हैं।
अब कर्म मैल के धोने को, जलधारा करने आए हैं।।

उदक चंदन .....महंयजे।

(चारों कलशों से अभिषेक करें।)

इष्टै– र्मनोरथ– शतैरिव भव्य– पुंसां, पूर्णैः सुवर्ण– कलशै– र्निखिला– वसानैः।
संसार– सागर– विलंघन– हेतु– सेतु– माप्लावये त्रिभुवनैक– पतिं जिनेन्द्रम्।।10।।

अभिषेक मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं क्षीं क्षीं इवीं इवीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर जलेन जिनभिषेचयामि स्वाहा। (यह पढ़कर अभिषेक करें।)

द्रव्यै– स्वल्प– घनसार– चतुः समाद्यै– रामोद– वासित– समस्त– दिगन्तरालैः।
मिश्री–कृत्तेन पयसा जिन–पुङ्गवानां, त्रैलोक्य पावनमहं स्नपनं करोमि।।11।।

अभिषेक मंत्र– ॐ ह्रीं श्रीं..... जिनाभिषेचयामि स्वाहा।

उदक चंदन .....महंयजे।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिभुवनपते अभिषेक अन्ते अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लघु शान्ति धारा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः। श्री वीतरागाय नमः।
वीतराग जगन् नेत्रं, सर्वज्ञं सर्व दर्शकं।
'विशद'शांति प्रदायं, शांतिधारा करोम्यहं।।

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पार्श्वतीर्थङ्कराय द्वादशगणपरिवेष्टिकाय, शुक्ल ध्यान पवित्राय, सर्वज्ञाय, स्वयं भुवे, सिद्धाय, बुद्धाय, परमात्मने, परम सुखाय, त्रैलोक्य महीव्याप्ताय, अनन्त संसार चक्रपरिमर्दनाय, अनन्त दर्शनाय, अनन्त ज्ञानाय, अनन्त वीर्याय, अनन्त सुखाय, त्रैलोक्यवशङ्कराय, सत्यज्ञानाय, सत्यब्रह्मणे, धरणेन्द्र फणामंडल मण्डिताय, ऋष्यार्यिका–श्रावक–श्राविका प्रमुख चतुस्संघोपसर्ग विनाशनाय, घातिकर्म विनाशनाय, अघातिकर्म विनाशनाय, अपवायं **छिंद–छिंद भिंद–भिंद।** मृत्युं **छिंद–छिंद भिंद–भिंद।** अतिकामं **छिंद–छिंद भिंद–भिंद।** रतिकामं **छिंद–छिंद भिंद–भिंद।** क्रोधं **छिंद–छिंद भिंद–भिंद।** अग्निभयं **छिंद–छिंद भिंद–भिंद।** सर्वशत्रुं **छिंद–छिंद भिंद–भिंद।** सर्वोपसर्गं **छिंद–छिंद भिंद–भिंद।** सर्वविघ्नं **छिंद–छिंद भिंद–भिंद।** सर्वभयं **छिंद–छिंद भिंद–भिंद।** सर्वराजभयं **छिंद–छिंद भिंद–भिंद।** सर्वचौरभयं **छिंद–छिंद भिंद–भिंद।** सर्वदुष्टभयं **छिंद–छिंद भिंद–भिंद।** सर्वमृगभयं **छिंद–छिंद भिंद–भिंद।** सर्वात्मचक्रभयं **छिंद–छिंद भिंद–भिंद।** सर्वपरमंत्र **छिंद–छिंद भिंद–भिंद।** सर्वशूल रोगं **छिंद–छिंद भिंद–भिंद। सर्वक्षय रोगं छिंद–छिंद भिंद–भिंद।** सर्वकुष्ठ रोगं **छिंद–छिंद भिंद–भिंद। सर्वक्रूर रोगं छिंद–छिंद भिंद–भिंद।** सर्वनरमारीं **छिंद–छिंद भिंद–भिंद।** सर्वगजमारीं **छिंद–छिंद भिंद–भिंद।** सर्वाश्वमारीं **छिंद–छिंद भिंद–भिंद।** सर्वगोमारीं **छिंद–छिंद भिंद–भिंद।** सर्वमहिषमारीं **छिंद–छिंद भिंद–भिंद।** सर्वधान्यमारीं **छिंद–छिंद भिंद–भिंद।** सर्ववृक्षमारीं **छिंद–छिंद भिंद–भिंद।** सर्वगुल्ममारीं **छिंद–छिंद भिंद–भिंद।** सर्वपत्रमारीं **छिंद–छिंद भिंद–भिंद।** सर्वपुष्पमारीं **छिंद–छिंद भिंद–भिंद।** सर्वफलमारीं **छिंद–छिंद भिंद–भिंद।** सर्वराष्ट्र मारीं **छिंद–छिंद भिंद–भिंद।** सर्व

देशमारीं **छिंद-छिंद भिंद-भिंद।** सर्व विषमारीं **छिंद-छिंद भिंद-भिंद।** सर्ववेताल शाकिनी **भयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद।** सर्ववेदनीयं **छिंद-छिंद भिंद-भिंद।** सर्वमोहनीयं **छिंद-छिंद भिंद-भिंद।** सर्वकर्माष्टकं **छिंद-छिंद भिंद-भिंद।**

ॐ सुदर्शन-महाराज-मम-चक्र विक्रम-तेजो-बल शौर्य-वीर्य शान्तिं कुरु-कुरु। सर्व जनानन्दनं **कुरु-कुरु।** सर्व भव्यानंदनं **कुरु-कुरु।** सर्व गोकुलानन्दनं **कुरु-कुरु।** सर्व ग्राम नगर खेट कर्वट मटंब पत्तन द्रोणमुख संवाहनन्दनं **कुरु-कुरु।** सर्व लोकानन्दनं **कुरु-कुरु। सर्व देशानंदनं कुरु-कुरु। सर्व यजमानन्दनं कुरु-कुरु।** सर्व दुःख हन-हन, दह-दह, पच-पच, कुट-कुट, शीघ्रं-शीघ्रं।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु व्याधि-व्यसन-वर्जितं।
अभयं क्षेम-मारोग्यं स्वस्ति-रस्तु विधीयते।।

श्री शांति-मस्तु! (नाम....) कुल-गोत्र-धन-धान्यं सदास्तु। चन्द्रप्रभ-वासुपूज्य-मल्लि- वर्द्धमान-पुष्पदंत-शीतल-मुनिसुव्रतस्त-नेमिनाथ-पार्श्वनाथ-इत्येभ्यो नमः।

इत्यनेन मंत्रेण नवग्रहाणां शान्त्यर्थं गंधोदक धारा-वर्षणम्।

शांति मंत्र-ॐ नमोर्हते भगवते प्रक्षीणाशेष दोष कल्मषाय दिव्य तेजो मूर्तये नमः श्री शान्तिनाथ शान्ति कराय सर्व विघ्न प्रणाशनाय सर्व रोगापमृत्यु विनाशनाय सर्व पर कृच्छ्रद्रोपद्र विनाशनाय सर्व क्षामडामर विघ्न विनाशनाय (.....) ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम सर्व देशस्य सर्व राष्ट्रस्य सर्व संघस्य तथैव सर्व शान्ति तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु।

शांतिः शिरोधृत जिनेश्वर शासनानां।
शांति निरन्तर तपोभव भावितानां।।
शांतिः कषाय जय जृम्भित वैभवानां।
शांतिः स्वभाव महिमान मुपागतानां।।
संपूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्र सामान्य तपोधनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोतु शांतिं भगवान जिनेन्द्रः।।

अज्ञान महातम के कारण, हम व्यर्थ कर्म कर लेते हैं।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, प्रभु शांति धारा देते हैं।।
अर्घ-नीर गंधाक्षत लेकर फूल, चरु ले दीप धूप फल मूल।
चढ़ाने लाए हैं ये अर्घ्य, 'विशद' हम पाएँ सुपद अनर्घ्य।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिभुवनपते शान्तिधारां अनन्तरे (पश्चात्) अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनाभिषेक समय की आरती

(तर्ज-सुरपति ले अपने...)

जिन प्रतिमा को धर शीश, चले नर ईश, सहित परिवारा।
जिन शीश पे देने धारा.....।। टेक।।
जिनवर अनन्त गुण धारी हैं, जो पूर्ण रूप अविकारी हैं।
जिनके चरणों में झुकता है जग सारा- जिन शीश...।।1।।
जिनगृह सुर भवनों में सोहें, स्वर्गों में भी मन को मोहें।
शत इन्द्र वहाँ जाके बोलें जयकारा-जिन शीश...।।2।।
गिरि तरुवर पर जिनगृह मानो, जिनबिम्ब श्रेष्ठ जिनमें मानो।
जो अकृत्रिम हैं ना निर्मित किसी के द्वारा-जिन शीश...।।3।।
जिन शीश पे धारा करते हैं, वे अपने पातक हरते हैं।
जिन भक्ती बिन यह है संसार असारा-जिन शीश...।।4।।
जिन शीश पे जो जल जाता है, वह गंधोदक बन जाता है।
जो रोगादिक से दिलवाए छुटकारा-जिन शीश...।।5।।
गंधोदक शीश चढ़ाते हैं, वे निश्चय शुभ फल पाते हैं।
मैना सुन्दरि ने पति का कुष्ट निवारा-जिन शीश...।।6।।
जिन मंदिर जो नर जाते हैं, वे विशद शांति सुख पाते हैं।
उनके जीवन का चमके 'विशद' सितारा-जिन शीश...।।7।।
जो पावन दीप जलाते हैं, अरु भाव से आरति गाते हैं।
उन जीवों का इस भव से हो निस्तारा-जिन शीश...।।8।।

विनय पाठ

इह विधि ठाड़ो होय के, प्रथम पढ़ै जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ।।1।।
अनन्त चतुष्टय के धनी, तुम ही हो सिरताज।
मुक्ति-वधू के कंत तुम, तीन भुवन के राज।।2।।
तिहुँ जग की पीड़ा हरन, भवदधि शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिव सुख के करतार।।3।।
हरता अघ-अंधियार के करता धर्म प्रकाश।
थिरता पद दातार हो, धरता निज गुण राश।।4।।
धर्मामृत उर जलधि सों, ज्ञान भानु तुम रूप।
तुमरे चरण सरोज को, नावत तिहुँ जग भूप।।5।।
मैं वन्दौं जिनदेव को, कर अति निर्मल भाव।
कर्मबंध के छेदने, और न कछू उपाव।।6।।
भविजन को भवकूप तैं, तुम ही काढ़नहार।
दीनदयाल अनाथपति, आतम गुण भंडार।।7।।
चिदानंद निर्मल कियो, धोय कर्म रज मैल।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिव गैल।।8।।
तुम पद पङ्कज पूजतें, विघ्न रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरै, विष निरविषता थाय।।9।।
चक्री खगधर इन्द्रपद, मिलै आपतै आप।
अनुक्रम कर शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप।।10।।
तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन।
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन।।11।।
पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेय।
अंजन से तारे प्रभु, जय जय जय जिनदेव।।12।।
थकी नाव भवदधि विषैं, तुम प्रभु पार करे।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव।।13।।
राग सहित जगमें रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेटचो अबै, मेटो राग कुटेव।।14।।

कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यंच अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान।।15।।
तुमको पूजैं सुरपति, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव।।16।।
अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भव सिंधु में, खेय लगाओ पार।।17।।
इन्द्रादिक गणपति थकी, कर विनती भगवान।
अपनो विरद निहारके, कीजे आप समान।।18।।
तुमरी नेक सुदृष्टि तैं, जग उतरत हैं पार।
हा हा डूब्यो जात हों, नेक निहार निकार।।19।।
जो मैं कह हूँ और सों, तो न मिटे उरझार।
मेरी तो तोसौं बनी, तातैं करौं पुकार।।20।।
वन्दौं पांचों परम गुरु, सुर गुरु वन्दत जास।
विघन हरन मंगल करण, पूरन परम प्रकाश।।21।।
चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यो पाठ सुखदाय।।22।।
मंगल मूर्ति परम पद, पंच धरौं नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान।।23।।
मंगल जिनवर पद नमों, मंगल अर्हंत देव।
मंगलकारी सिद्धपद, सो वंदौं स्वयमेव।।24।।
मंगल आचारज मुनि, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल करो, वंदौं मन वच काय।।25।।
मंगल सरस्वती मात का, मंगल जिनवर धर्म।
मंगलमय मंगल करों, हरों असाता कर्म।।26।।
या विधि मंगल करन से, जग में मंगल होत।
मंगल 'नाथूराम' यह, भव सागर दृढ़ पोत।।27।।

अथ् अर्हत पूजा प्रतिज्ञायां... *।। पुष्पांजलि क्षिपामि।।*

पूजन प्रारम्भ

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।।1।।

ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पांजलि क्षेपण करना)

चत्तारि मंगलं अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलि-पण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्ञामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलि-पण्णतं धम्मं सरणं पव्वज्जामि। ॐ नमोऽर्हते स्वाहा (पुष्पांजलि)

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंचनमस्कारं, सर्वपापैः प्रमुच्यते।।1।।
अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः।।2।।
अपराजित-मंत्रोऽयं सर्वविघ्न-विनाशनः।
मङ्गलेषु च सर्वेषु प्रथमं मङ्गलम् मतः।।3।।
एसो पञ्च णमोयारो सव्वपावप्पणासणो।
मङ्गलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं।।4।।
अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म-वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहं।।5।।
कर्माष्टकविनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मी निकेतनम्।
सम्यक्त्वादिगुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहं।।6।।
विघ्नौघाः प्रलयम् यान्ति शाकिनी-भूतपन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे।।7।।

(यहाँ पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिये)

पंचकल्याणक अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैशचरु-सुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे कल्याणमहं यजे।।

ॐ ह्रीं भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाणपंचकल्याणकेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच परमेष्ठी का अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैशचरु-सुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाथमहं यजे।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसहस्रनाम अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैशचरु-सुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाम यजामहे।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टोत्तरसहस्रनामेभ्योअर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी का अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैशचरु-सुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि तत्वार्थसूत्रदशाध्याय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्ति मंगल

श्री मज्जिनेन्द्रमभिवंद्य जगत्त्रयेशं, स्याद्वाद-नायक मनंत चतुष्टयार्हम्।
श्रीमूलसङ्घ-सुदृशां-सुकृतैकहेतु-जैनेन्द्र-यज्ञ-विधिरेष मयाऽभ्यधायि।।
स्वस्ति त्रिलोकगुरुवे जिनपुङ्गवाय, स्वस्ति-स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय।
स्वस्ति प्रकाश सहजोर्ज्जितदृङ् मयाय, स्वस्तिप्रसन्न-ललिताद्भुत वैभवाय।।
स्वस्त्युच्छलद्विमल-बोध-सुधाप्लवाय; स्वस्ति स्वभाव-परभावविभासकाय।
स्वस्ति त्रिलोक-वितताैक चिदुद्गमाय, स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत विस्तृताय।।
द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्ययथानुरूपं; भावस्य शुद्धि मधिकामधिगंतुकामः।
आलंबनानि विविधान्यवलंब्यवल्गन्;भूतार्थयज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञं।।

अर्हत्पुराण-पुरुषोत्तम पावनानि, वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव।
अस्मिन् ज्वलद्विमलकेवल-बोधवह्नो; पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ-प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री वृषभो नः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अजितः।
श्री संभवः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अभिनन्दनः।
श्री सुमतिः स्वस्ति; स्वस्ति श्री पद्मप्रभः।
श्री सुपार्श्वः स्वस्ति; स्वस्ति श्री चन्द्रप्रभः।
श्री पुष्पदन्तः स्वस्ति; स्वस्ति श्री शीतलः।
श्री श्रेयांसः स्वस्ति; स्वस्ति श्री वासुपूज्यः।
श्री विमलः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अनन्तः।
श्री धर्मः स्वस्ति; स्वस्ति श्री शान्तिः।
श्री कुन्थुः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अरहनाथः।
श्री मल्लिः स्वस्ति; स्वस्ति श्री मुनिसुव्रतः।
श्री नमिः स्वस्ति; स्वस्ति श्री नेमिनाथः।
श्री पार्श्वः स्वस्ति; स्वस्ति श्री वर्धमानः।

(पुष्पांजलि क्षेपण करें)

नित्याप्रकम्पाद्भुत-केवलौघाः स्फुरन्मनः पर्यय शुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञानबलप्रबोधाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।1।।

(यहाँ से प्रत्येक श्लोक के अन्त में पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिये।)

कोष्ठस्थ-धान्योपममेकबीजं संभिन्न-संश्रोतृ पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।2।।

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादना-घ्राण-विलोकनानि।
दिव्यान् मतिज्ञानबलाद्भवंतः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।3।।

प्रज्ञा-प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः प्रत्येकबुद्धाः दशसर्वपूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्तविज्ञाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।4।।

जङ्घावलि-श्रेणि -फलाम्बु-तंतु-प्रसून-बीजांकुर चारणाह्वाः।
नभोऽङ्गण-स्वैर-विहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।5।।

अणिम्नि दक्षाःकुशला महिम्नि, लघिम्निशक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो-वपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।6।।

सकामरूपित्व-वशित्वमैश्यं प्राकाम्य मंतर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतिघातगुण प्रधानाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।7।।

दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोरगुणाश्चरंतः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।8।।

आमर्षसर्वौषधयस्तथाशीर्विषा विषा दृष्टिविषंविषाश्च।
सखिल्ल-विड्जल्लमल्लौषधीशाः,स्वस्तिक्रियासुपरमर्षयो नः।।9।।

क्षीरं स्रवन्तोऽत्रघृतं स्रवन्तो मधुस्रवंतोऽप्यमृतं स्रवन्तः।
अक्षीणसंवास महानसाश्चं स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।10।।

(इति पुष्पांजलि क्षिपेत्) *(इति परम-ऋषिस्वस्ति मंगल विधानम्)*

आचार्य 108 श्री विशदसागरजी महाराज का अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर ले, मन में भाव बनाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें, गुरु चरणों में सिर धरते हैं।।

ॐ हूँ क्षमामूर्ति आचार्य 108 श्री विशदसागरजी यतिवरेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवदेवता पूजन

स्थापना

हे लोक पूज्य अरिहंत नमन् !, हे कर्म विनाशक सिद्ध नमन्!
आचार्य देव के चरण नमन् अरु, उपाध्याय को शत् वन्दन।।
हे सर्व साधु है तुम्हें नमन् ! हे जिनवाणी माँ तुम्हें नमन्!।
शुभ जैन धर्म को करूँ नमन्, जिनबिम्ब जिनालय को वन्दन।।
नव देव जगत् में पूज्य 'विशद', है मंगलमय इनका दर्शन।
नव कोटि शुद्ध हो करते हैं, हम नव देवों का आह्वानन।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिनचैत्य चैत्यालय समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिनचैत्य चैत्यालय समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिनचैत्य चैत्यालय समूह अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छन्द)

हम तो अनादि से रोगी हैं, भव बाधा हरने आये हैं।
मेरा अन्तर तम साफ करो, हम प्रासुक जल भर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से सारे कर्म धुलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप में जलकर हमने, अगणित अति दुख पाये हैं।
हम परम सुगंधित चंदन ले, संताप नशाने आये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से भव संताप गलें।
हे नाथ ! आपके चरणों में श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जग वैभव क्षण भंगुर है, उसको पाकर हम अकुलाए ।
अब अक्षय पद के हेतु प्रभू, हम अक्षत चरणों में लाए ।।

नवकोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अक्षय शांति मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बहु काम व्यथा से घायल हो, भव सागर में गोते खाये।
हे प्रभु! आपके चरणों में, हम सुमन सुकोमल ले आये।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अनुपम फूल खिलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो:कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम क्षुधा रोग से अति व्याकुल, होकर के प्रभु अकुलाए हैं।
यह क्षुधा मेटने हेतु चरण, नैवेद्य सुसुन्दर लाए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती कर सारे रोग टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोह तिमिर ने सदियों से, हमको जग में भरमाया है।
उस मोह अन्ध के नाश हेतु, मणिमय शुभ दीप जलाया है।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चा कर ज्ञान के दीप जलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हसिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

भव वन में ज्वाला धधक रही, कर्मों के नाथ सतायें हैं।
हों द्रव्य भाव नो कर्म नाश, अग्नि में धूप जलायें हैं।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, पूजा करके वसु कर्म जलें ।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे जग के फल खाकर भी, हम तृप्त नहीं हो पाए हैं।
अब मोक्ष महाफल दो स्वामी, हम श्रीफल लेकर आए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ति कर हमको मोक्ष मिले।
हे नाथ ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।8 ।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने संसार सरोवर में, सदियों से गोते खाये हैं।
अक्षय अनर्घ पद पाने को, वसु द्रव्य संजोकर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों के, वन्दन से सारे विघ्न टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता छन्द

नव देव हमारे जगत सहारे, चरणों देते जल धारा।
मन वच तन ध्याते जिन गुण गाते, मंगलमय हो जग सारा।।

शांतये शांति धारा करोति।

ले सुमन मनोहर अंजलि में भर, पुष्पांजलि दे हर्षाएँ।
शिवमग के दाता ज्ञानप्रदाता, नव देवों के गुण गाएँ।।

दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।

जाप्य (9, 27 या 108 बार)

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो नम:।

जयमाला

दोहा – **मंगलमय नव देवता, मंगल करें त्रिकाल।**
मंगलमय मंगल परम, गाते हैं जयमाल।।

(चाल टप्पा)

अर्हन्तों ने कर्म घातिया, नाश किए भाई।
दर्शन ज्ञान अनन्तवीर्य सुख, प्रभु ने प्रगटाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...
सर्वकर्म का नाश किया है, सिद्ध दशा पाई।
अष्टगुणों की सिद्धि पाकर, सिद्ध शिला जाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...
पञ्चाचार का पालन करते, गुण छत्तिस पाई।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, जैनाचार्य भाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...
उपाध्याय है ज्ञान सरोवर, गुण पच्चिस पाई।
रत्नत्रय को पाने वाले, शिक्षा दें भाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...
ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, जैन मुनी भाई।
वीतराग मय जिन शासन की, महिमा दिखलाई।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...

सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित्रमय, जैन धर्म भाई।
परम अहिंसा की महिमा युत, क्षमा आदि पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...
श्री जिनेन्द्र की ओम् कार मय, वाणी सुखदाई।
लोकालोक प्रकाशक कारण, जैनागम भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...
वीतराग जिनबिम्ब मनोहर, भविजन सुखदाई।।
वीतराग अरु जैन धर्म की, महिमा प्रगटाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...
घंटा तोरण सहित मनोहर, चैत्यालय भाई।
वेदी पर जिन बिम्ब विराजित, जिन महिमा गाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

दोहा– नव देवों को पूजकर, पाऊँ मुक्ती धाम।
''विशद'' भाव से कर रहे, शत्–शत् बार प्रणाम्।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा– भक्ति भाव के साथ, जो पूजें नव देवता।
पावे मुक्ति वास, अजर अमर पद को लहें।।

इत्याशीर्वाद :

तीर्थ वंदना भाव से करते हैं जो जीव।
कर्म नाशकारी 'विशद' पाते पुण्य अतीव।।

तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र श्री सम्मेदशिखर स्तवन

सोरठा- सम्मेदाचल धाम, शाश्वत तीरथराज है।
बारंबार प्रणाम, मंगलकारी जगत् में।।

श्री सम्मेद शिखर मंगलमय, शाश्वत तीर्थराज पावन।
भव्य जनों को मोक्ष प्रदायक, तीन लोक में मन भावन।।
जो त्रिकाल तीर्थंकर जिन का, मुनियों का है मुक्तिधाम।
उन सिद्धों के पद पंकज अरु, सिद्ध क्षेत्र को विशद प्रणाम।।1।।
काल अनादि अरु अनंत है, कोई न सृष्टी का कर्त्ता।
जीव रहा चैतन्य स्वरूपी, सर्व लोक सुख-दुःख भर्त्ता।।
रत्नत्रय को पाने वाला, जीव जगत् मंगलकारी।
संयम पथ पर बढ़ने वाला, मोक्ष मार्ग का अधिकारी।।2।।
उज्ज्वल तीर्थ क्षेत्र पावन है, सब तीर्थों में रहा प्रधान।
सरस सुउन्नत है गुणधारी, सुखदायक है अचल महान्।।
अतिशय महिमा कहने वाला, कोई जग में नहीं समर्थ।
लघु शब्दों में महिमा गाना, मेरी चेष्टा का क्या अर्थ।।3।।
भक्ति के उद्रेक हृदय में, मेरे नहीं समाते हैं।
अपनी क्षमता से महिमा हम, भाव सहित कुछ गाते हैं।।
मधुवन का है ताज मनोहर, गगन क्षेत्र जिसका पावन।
ओर छोर न दिखता जिसका, भूमण्डल है सिंहासन।।4।।
क्या राजा ? क्या रंक ? हरी क्या ? चक्रीकाम देव सारे।
इन्द्र और नागेन्द्र सभी मिल, बोलें अनुपम जयकारे।।
तीर्थक्षेत्र के वंदन का शुभ, इन सब ने भी फल पाया।
तीर्थंकर अरु तीर्थ क्षेत्र को, 'विशद' हृदय से जब ध्याया।।5।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्...

तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र पूजन

स्थापना

आदिनाथ जी अष्टापद से, वासुपूज्य चम्पापुर धाम।
नेमिनाथ ऊर्जयन्त गिरि अरु, महावीर पावापुर ग्राम।।
गिरिसम्मेद शिखर से मुक्ती, पाए जिन तीर्थंकर बीस।
तीर्थंकर निर्वाण भूमियों, को हम झुका रहे हैं शीश।।
तीन लोकवर्ती जीवों से, जो त्रिकाल हैं पूज्य महान्।
विशदभाव से वंदन करके, उर में करते हैं आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठिन्! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

छंद-शम्भू

जग की माया में फंसकर, कई जीवन व्यर्थ गवाएँ हैं।
श्री जिनेन्द्र वाणी का अमृत, ग्रहण नहीं कर पाए हैं।।
जन्म मृत्यु का रोग मिटे हम, अमृत नीर चढ़ाते हैं।
निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठिने जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चिंता ने चिता बना डाला, हम इससे बहुत सताए हैं।
चिंतन से चिंता क्षय होवे, संताप नशाने आए हैं।।
संसार ताप मिट जाए आज, हम चंदन चरण चढ़ाते हैं।
निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठिने संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय स्वभाव है आतम का, हम भूल उसे पछताए हैं।
हमने अनादि से पाया न, अब उसको पाने आए हैं।।
अक्षय पद मिल जाए हमें, यह अक्षत श्रेष्ठ चढ़ाते हैं।
निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठिने अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामिति स्वाहा।

पुष्पों की गंध मनोहर है, इससे जगती महकाती है।
उस गंध सुगंधी को पाने, जनता सारी ललचाती है।।
हो काम वासना नाश पूर्ण, यह पुष्पित पुष्प चढ़ाते हैं।
निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठिने कामवाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सदियों से भोजन बहुत किया, पर भूख नहीं मिट पाई है।
प्राणी को बहुत सताती है, यह भूख बहुत दुखदायी है।।
मिट जाए क्षुधा का रोग पूर्ण, यह चरुवर सरस चढ़ाते हैं।
निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठिने क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञान अंधेरा छाया है, सद्ज्ञान दीप न जल पाए।
हो जाय नाश मिथ्यातम का, यह दीप जलाकर हम लाए।।
अज्ञान तिमिर का हो विनाश, यह मनहर दीप जलाते हैं।
निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठिने मोहां**ध**कार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्मों की माया से, हम सदा सताते आए हैं।
आठों अंगों को बाँध रखा, हम उनसे छूट न पाए हैं।।

हो अष्ट कर्म का नाश शीघ्र, अग्नि में धूप जलाते हैं।
निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठिने अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो किए पूर्व में कर्म कई, वह सभी उदय में आते हैं।
फल उनका शुभ या अशुभ सभी, प्राणी इस जग के पाते हैं।।
अब मोक्ष महाफल पाने को यह, श्रीफल सरस चढ़ाते हैं।
निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठिने मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामिति स्वाहा।

हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य श्रेष्ठ, यह शुद्ध बनाकर लाए हैं।
अष्टम वसुधा है सिद्ध भूमि, हम उसको पाने आए हैं।।
अब पद अनर्घ पाने हेतु, यह मनहर अर्घ्य चढ़ाते हैं।
निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठिने अनर्घ पद प्राप्ताय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम वलय:

दोहा – **पूजा के शुभ भाव से, भाव सुमन ले हाथ।**
पुष्पाञ्जलि अर्पित करें, झुका चरण में माथ।।

मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

अष्टापद (श्री आदिनाथ भगवान)

अष्टापद तीरथ की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा – **आदिनाथ निर्वाण, अष्टापद से पाए हैं।**
काल दोष यह मान, मोक्ष हुआ जो वहाँ से।।

हे ज्ञानमूर्ति करुणा निधान ! हे धर्म दिवाकर करुणाकर !।
हे तेज पुंज ! हे तपोमूर्ति ! सन्मार्ग दिवाकर रत्नाकर !।।
हे धर्म प्रवर्तक ! आदिनाथ, तव चरणों में करते वंदन।
हम अष्ट गुणों को पा जाएँ, प्रभु भाव सहित करते अर्चन।।
हम भव सागर में भटक रहे, अब तो मेरा उद्धार करो।
श्री वीतराग सर्वज्ञ महाप्रभु, भव समुद्र से पार करो।।
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्रादि दस हजार मुनि कैलाश पर्वत से मोक्ष गये तिनके चरणारविंद को मन वचन काय से अत्यंत भक्ति भाव से बारंबार नमस्कार हो, जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंपापुर (श्री वासुपूज्य भगवान)

चंपापुर तीरथ की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा – **पाए पद निर्वाण, चंपापुर से प्रभु जी।**
वासुपूज्य भगवान, कालदोष यह जानिए।।

चम्पापुर नगरी मन भाए, पांचों कल्याणक प्रभु पाए।
बालयति जो प्रथम कहाए, उनकी महिमा कही न जाए।।
महिमा कही न जाय प्रभु की, जो परम मंगल कहे।
उनके गुणों का गान करने, में सफल हम न रहे।।
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो।।
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।2।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्रादि चंपापुर मंदारगिरी से सिद्ध पद प्राप्त श्री चम्पापुर सिद्ध क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गिरनार (श्री नेमिनाथ भगवान)

श्री गिरनार सुगिरि की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा – गिरि गिरनार महान्, ऊर्जयन्त भी नाम है।
पाए पद निर्वाण, काल दोष से नेमि जिन।।

नेमिनाथ के चरण कमल में, भव्य जीव आ पाते हैं।
तीर्थंकर जिन के दर्शन से, सर्व कर्म कट जाते हैं।।
गिरि गिरनार के ऊपर श्रीजिन, को हम शीश झुकाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, प्रभु के चरण चढ़ाते हैं।।
राहु अरिष्ट ग्रह शांत करो प्रभु, हमने तुम्हें पुकारा है।
हमको प्रभु भव से पार करो, तुम बिन न कोई हमारा है।।
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्रादि शम्बू प्रद्युम्न अनिरुद्ध इत्यादि बहत्तर करोड़ सात सौ मुनि गिरनार पर्वत से सिद्ध हुए तिनके चरणारविंद को मेरा मन, वचन, काय से अत्यंत भक्तिभाव से बारंबार नमस्कार हो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पावापुर (श्री महावीर भगवान)

पावापुर तीरथ की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा – पाए पद निर्वाण, पद्म सरोवर से प्रभु।
महावीर भगवान, काल दोष यह मानिए।।

हे वीर प्रभो ! महावीर प्रभो !, हमको सद्राह दिखा जाओ।
यह भक्त खड़ा है आश लिये, प्रभु आशिष दो उर में आओ।।
तुम तीन लोक में पूज्य हुए, हम पूजा करने को आए।
हम भक्ति भाव से हे भगवन् ! यह भाव सुमन कर में लाए।।

हे नाथ ! आपके द्वारे पर, हम आये हैं विश्वास लिए।
शुभ अर्घ्य समर्पित करते हैं, यह भक्त खड़े अरदास लिए।।
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।4।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर स्वामी पावापुर के पद्म सरोवर स्थान से छब्बीस मुनि सहित मोक्ष पधारे, तिनके चरणारविंद में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – पूज्य क्षेत्र निर्वाण हैं, तीन लोक में श्रेष्ठ।
जयमाला गाते परम, जिनकी यहाँ यथेष्ठ।।

श्री निर्वाण क्षेत्र में जाय, वंदन कर प्राणी फल पाय।
महासुख दाय, जय-जय तीर्थ परम पद दाय।।टेक।।
श्री सम्मेद शिखर मनहार, सर्व लोक में मंगलकार।
बृहस्पति भी महिमा को गाय, फिर भी पूर्ण नहीं कर पाय।
महासुख दाय ...।।
यह तीरथ है अतिशयवान, बीस जिनेन्द्र पाए निर्वाण।
कर्म नाशकर छोड़ी काय, तीन योग से जिनको ध्याय।।
महासुखदाय ...।।
आदिनाथ अष्टापद धाम, तीर्थ क्षेत्र को करूँ प्रणाम।
चरण कमल में शीष झुकाए, तीन योग से जिनको ध्याय।।
महासुखदाय ...।।
प्रथम जिनेश्वर आदिनाथ, तिनके चरण झुकाऊँ माथ।
मन में यही भावना भाय, वह भी मुक्ति वधु को पाय।।
महासुखदाय ...।।
वासुपूज्य चंपापुर धाम, कर्मों से पाए विश्राम।
देव सभी चरणों में आये, भक्ति करके हर्ष मनाय।।
महासुखदाय ...।।

चंपापुर है तीर्थ महान्, पाए प्रभो ! पञ्चकल्याण।
सभी तीर्थ चम्पापुर जाय, अनुपम यह महिमा दिखलाय।।
महासुखदाय ...।।
ऊर्जयंत गिरि रही महान्, नेमिनाथ पाए निर्वाण।
पञ्चम टोंक पे ध्यान लगाय, अपने सारे कर्म नशाय।।
महासुखदाय ...।।
शम्भू आदि अन्य मुनीश, सिद्ध बने शिवपुर के ईश।
महिमा जिसकी कही न जाय, सिद्ध सुपद पाए जिनराय।।
महासुखदाय ...।।
पावापुर है तीर्थ महान्, महावीर पाए निर्वाण।
पद्म सरोवर पुष्प खिलाय, सारा तीर्थ रहा महकाय।।
महासुखदाय ...।।
महिमा जिसकी अपरंपार, करो वंदना बारंबार।
इस जीवन को सुखी बनाय, अनुक्रम से मुक्ति को पाय।।
महासुखदाय ...।।
पांचों तीर्थक्षेत्र निर्वाण, तीर्थंकर के रहे महान्।
भव्य जीव वंदन को जाय, मन में अतिशय हर्ष मनाय।।
महासुखदाय ...।।
बोल रहे हम जय-जयकार, हम भी पा जावें भव पार।
अंतिम विशद भावना भाय, कथन किया मन से हर्षाय।।
महासुखदाय ...।।
दोहा - पाप क्षीणकर पुण्य से, मिले तीर्थ का योग।
अंतिम मुक्ति वास हो, वंदन करूँ त्रियोग।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - है अंतिम यह भावना, होय समाधीवास।
तीर्थक्षेत्र निर्वाण से, पाऊँ ज्ञान प्रकाश।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री सम्मेद शिखर पूजन

स्थापना

हे तीर्थराज ! हे सिद्ध भूमि !, हे मंगलकारी ! मोक्षधाम।
हे भव बाधा हर पुण्य तीर्थ !, हे प्राची के दिनकर ललाम ! ।।
त्रैलोक्य पूज्य त्रैकालिक शुभ, भवि जीवों के पावन आधार।
श्री सिद्ध क्षेत्र सम्मेद शिखर, की बोलो भाई जय-जयकार।।
आह्वानन् करके अंतर में, जो जिन सिद्धों को ध्याते हैं।
वे सिद्ध क्षेत्र की पूजा कर, यह जीवन सफल बनाते हैं।।

ॐ ह्रीं शाश्वत तीर्थराज श्री सम्मेदशिखर सिद्ध क्षेत्र अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(अष्टक)

क्षीर सागर सा समुज्ज्वल, धवल जल लेकर अमल।
शत् इन्द्र करते वंदना शुभ, गीत भी गाते विमल।।
भव्याम्बुजों को नित प्रफुल्लित, सूर्य सम जो कर रहा।
जो जन्म मृत्यु के दुःखों से, मुक्त करता है अहा।।1।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

अगुरु पंकज तुल्य सुरभित, सरस चंदन हाथ ले।
परम उज्ज्वल श्रेष्ठ केसर, अर्चना को साथ ले।।
भव्याम्बुजों को नित प्रफुल्लित, सूर्य सम जो कर रहा।
भव ताप नाशक सर्व दुख से, मुक्त जो करता अहा।।2।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

पूर्णिमा की चांदनी सम, पूर्ण अक्षत ले अमल।
रमणीयता वरती उन्हें जो, अर्चना करते विमल।।

भव्याम्बुजों को नित प्रफुल्लित, सूर्य सम जो कर रहा।
शाश्वत सुपद दायक परम है, मुक्त जो करता अहा।।3।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्योऽक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

विश्व के कल्याण की, मंगलमयी आराधना।
चित्त को आनंददायी, हो परम पुष्पार्चना।।
भव्याम्बुजों को नित प्रफुल्लित, सूर्य सम जो कर रहा।
काम दाहक सर्व दुख से, मुक्त जो करता अहा।।4।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यःकाम बाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

कल्पद्रुम सम फल प्रदात्री, सर्वदा हितकारिणी।
आराधना चउ सरस युत शुभ, भव्य मनसिज हारिणी।।
भव्याम्बुजों को नित प्रफुल्लित, सूर्य सम जो कर रहा।
क्षुधा की बाधा विनाशक, मुक्त जो करता अहा।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

है अलौकिक दिव्य मनहर, दीप की अनुपम प्रभा।
देखकर होती प्रफुल्लित, देव नर पशु की सभा।।
भव्याम्बुजों को नित प्रफुल्लित, सूर्य सम जो कर रहा।
मोहतम हो नाश क्षण में, मुक्त जो करता अहा।।6।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो मोहाधंकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

कर्पूर चंदन आदि उत्तम, परम आनन्द कारणी।
वाचस्पति सम धूप पावन, विशद प्रतिभा दायिनी।।
भव्याम्बुजों को नित प्रफुल्लित, सूर्य सम जो कर रहा।
कर्म को करके तिरोहित, मुक्त जो करता अहा।।7।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्योऽष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

कल्पद्रुम सम फल मनोहर, हैं समर्पित भाव से।
कर रहे आराधना हम, आनंद अतिशय चाव से।।
भव्याम्बुजों को नित प्रफुल्लित, सूर्य सम जो कर रहा।
मोक्षपद से हो विभूषित, मुक्त जो करता अहा।।8।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

अष्ट द्रव्यों की विनाशक, द्रव्य आठों ले परम।
विश्व में कल्याणकारी, कल्पद्रुप सम है शुभम्।।
भव्याम्बुजों को नित प्रफुल्लित, सूर्य सम जो कर रहा।
सर्वार्थ सिद्धि का प्रदायक, मुक्त जो करता अहा।।9।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्योऽनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा– सब तीर्थों में श्रेष्ठ है, पावन तीरथ राज।
गाते हैं जयमालिका, मिलकर सकल समाज।।

(तर्ज – जाने वाले एक संदेशा ...)

गिरि सम्मेद शिखर का वंदन, करने को जो भी जाते।
अक्षय पुण्य कमाने वाले, अक्षय पदवी को पाते।।
शाश्वत तीर्थराज है अनुपम, कण–कण जिसका है पावन।
हरे भरे वृक्षों के ऊपर, पुष्प खिले हैं मन भावन।।
दूर–दूर से आशा लेकर, श्रावक वंदन को आते।।
अक्षय पुण्य ...।।1।।

तीर्थ वंदना करने वाले, किस्मत वाले होते हैं।
भाव सहित वंदन करके शुभ, बीज पुण्य के बोते हैं।।
श्रावक आकर भक्तिभाव से, गीत भक्ति के शुभ गाते ।
अक्षय पुण्य ...।।2।।

पूर्व भवों के पुण्योदय से, अंतर में श्रद्धा जागे।
वीतराग जिनधर्म सुकुल जिन, भक्ति में भी मन लागे।।
भव्य भक्त भक्ति करने को, भाव पुष्प कर में लाते।
अक्षय पुण्य ...।।3।।

तीर्थ नाम पर हम सदियों से, धोखे खाते आए हैं।
चतुर्गति में भटके लेकिन, फिर भी समझ न पाए हैं।।

पहले समझ न पाते प्राणी, अन्त समय में पछताते ।।
अक्षय पुण्य ...।।4।।
मन में यह विश्वास हमारा, हम वंदन को जाएँगे।
तीर्थ वंदना करके हम भी, तीर्थ रूप हो जाएँगे।।
सिद्धों के गुण पाने की हम, विशद भावना शुभ भाते।
अक्षय पुण्य ...।।5।।

छंद – घत्तानंद

जय महिमाधारी, जग हितकारी, सर्व जगत् मंगलकारी।
कण–कण है पावन, अतिमन भावन, भवि जीवों को सुखकारी।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सोरठा– पूजा करें महान्, शाश्वत तीरथराज की।
होय जगत् कल्याण, सर्व सौख्य मुक्ति मिले।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

द्वितीय वलयः

सोरठा – मोक्ष गये जिन बीस, शाश्वत तीरथ राज से।
झुका चरण में शीश, पुष्पाञ्जंलि करते परम।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

ज्ञानधर कूट (श्री कुंथुनाथ भगवान)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा – कुंथुनाथ भगवान, परम ज्ञानधर कूट से।
पाए पद निर्वाण, मुक्त हुए संसार से।।

पावन कूट ज्ञानधर भाई, कुंथुनाथ जिन मुक्ति पाई।
अन्य मुनीश्वर ध्यान लगाए, कर्म नाश कर मोक्ष सिधाए।।

पाए हैं मुक्तिधाम अनुपम, नहीं जिसका अंत है।
अतिशय मनोहर कूट अनुपम, विशद महिमावंत है।।
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो।।
चलो–चलो रे–2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।1।।

ॐ ह्रीं ज्ञानधर कूटतः श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्रादि छियानवे कोड़ाकोड़ी छियानवे करोड़ बत्तीस लाख छियानवे हजार सात सौ ब्यालीस मुनि सिद्ध पद प्राप्त श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मित्रधर कूट (श्री नमिनाथ भगवान)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा – नमिनाथ भगवान, श्रेष्ठ मित्रधर कूट से।
पाए पद निर्वाण, मुक्त हुए हैं कर्म से।।

नीलकमल लक्षण के धारी, नमिनाथ जिन मंगलकारी।
प्रभु ने कर्म घातिया नाशे, अतिशय केवल ज्ञान प्रकाशे।।
होकर प्रकाशी ज्ञान के, उपदेश दे सद्ज्ञान का।
मारग बताया आपने, संसार को कल्याण का।।
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो।।
चलो–चलो रे–2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।2।।

ॐ ह्रीं मित्रधर कूटतः श्री नमिनाथ जिनेन्द्रादि नौ कोड़ाकोड़ी एक अरब पैंतालीस लाख सात हजार नौ सौ ब्यालीस मुनि सिद्ध पद प्राप्त श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाटक कूट (श्री अरहनाथ भगवान)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा – **तीन पदों के साथ, मुक्त हुए संसार से।**
चरण झुकाऊँ माथ, अरहनाथ भगवान को।।

नाटक कूट नाम है भाई, जहँ से प्रभु ने मुक्ति पाई।
हम भी मुक्ति पाने आए, भक्ति भाव से शीश झुकाए।
चरणों झुकाकर शीश हम, प्रभु कर रहे हैं अर्चना।
ले द्रव्य आठों थाल में शुभ, कर रहे हैं वंदना।।
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम 'विशद' मम्, आत्म का उद्धार हो।।
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।3।।

ॐ ह्रीं नाटक कूटत: श्री अरहनाथ जिनेन्द्रादि निन्यानवे करोड़ निन्यानवे लाख निन्यानवे हजार नौ सौ निन्यानवे मुनि सिद्ध पद प्राप्त श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

संबल कूट (श्री मल्लिनाथ भगवान)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा – **मल्लिनाथ भगवान, अष्ट कर्म को जीतकर।**
पाया पद निर्वाण, शिव नगरी में जा बसे।।

संबलकूट श्रेष्ठ मन भाया, मल्लिनाथ ने ध्यान लगाया।
आठों कर्म नाशकर भाई, अष्ट गुणों की सिद्धि पाई।।
सिद्धि प्रभु ने प्राप्त करके, सिद्ध पद पाया अहा।
अर्हन्त पद के साथ में अब, सिद्ध जिन को भी कहा।।

हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो।।
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।4।।

ॐ ह्रीं संब्ल कूटत: श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्रादि छियानवे करोड़ मुनि सिद्ध पद प्राप्त श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संकुल कूट (श्री श्रेयांसनाथ भगवान)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा – **श्रेयश पाया श्रेष्ठ, श्री श्रेयांस तीर्थेश ने।**
जिनवर हुए यथेष्ठ, कर्म घातिया नाशकर।।

संकुल कूट बड़ा मनहारी, तीर्थराज ये विस्मयकारी।
मन को आह्लादित कर देवे, दु:खियों के दु:ख जो हर लेवे।।
हरता दुखों को जीव के जो, भाव से वंदन करें।
हो नाश दुख दुर्गति का जो, श्रेष्ठ अभिनंदन करें।।
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो।।
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।5।।

ॐ ह्रीं संकुल कूटत: श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्रादि छियानवे कोड़ाकोड़ी छियानवे करोड़ छियानवे लाख नौ हजार पांच सौ ब्यालीस मुनि सिद्ध पद प्राप्त श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुप्रभ कूट (श्री पुष्पदंत भगवान)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा – **सुप्रभ कूट महान्, तीनों लोक में।**
मुक्ति का स्थान, पुष्पदन्त भगवान का।।

सम्मेदाचल पर्वत जग में न्यारा, सब जीवों का तारणहारा।
महिमा जिसकी अतिशयकारी, तीन लोक में मंगलकारी।।
हैं मिष्ठ वचन मोदक जैसे, दीपक सम ज्ञान प्रकाश रहा।
यह धूप समान सुविकसित कर, फल श्रीफल जैसा सुफल अहा।।
अपने मन के शुभ भावों का, यह चरणों अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हम परम पूज्य जिन पुष्पदंत को, विशदभाव से ध्याते हैं।।
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।6।।

ॐ ह्रीं सुप्रभ कूटत: श्री पुष्पदंत जिनेन्द्रादि एक कोड़ाकोड़ी निन्यानवै लाख सात हजार चार सौ अस्सी मुनि सिद्ध पद प्राप्त श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहन कूट (श्री पद्मप्रभ भगवान)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा – **मोहन कूट प्रसिद्ध, है तीनों ही लोक में।**
हुए जिनेश्वर सिद्ध, पद्मप्रभु जी जहाँ से।।

हे त्याग मूर्ति ! करुणा निधान !, हे धर्म दिवाकर तीर्थंकर !।
हे ज्ञान सुधाकर तेज पुंज !, सन्मार्ग दिवाकर करुणाकर !।।
हे परमब्रह्म ! हे पद्मप्रभु ! हे भूप ! श्री धर के नंदन !।
हम अष्ट द्रव्य से करते हैं प्रभु, भाव सहित उर से अर्चन।।
हे नाथ ! हमारे अंतर में, आकर के धीर बंधा जाओ।
हम भूले भटके भक्तों को,प्रभुवर सन्मार्ग दिखा जाओ।।
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।7।।

ॐ ह्रीं मोहन कूटत: श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्रादि निन्यानवे करोड़ सतासी लाख तैंतालीस हजार सात सौ नब्बे मुनि सिद्ध पद प्राप्त श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्जर कूट (श्री मुनिसुव्रत भगवान)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा – **मुनिसुव्रत भगवान, मुक्त हुए हैं कर्म से।**
निर्जर कूट महान्, भक्ति करते भाव से।।

तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत प्रभु, के चरणों में करूँ नमन्।
नृप सुमित्र के राजदुलारे, पद्मावती मां के नंदन।।
मुनिव्रतधारी हे भवतारी ! योगीश्वर ! जिनवर वंदन।
हम शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु, करते हैं प्रभु का अर्चन।
हे जिनेन्द्र ! मम् हृदय कमल पर, आना तुम स्वीकार करो।
अब चरण शरण का भक्त बनालो, इतना सा उपकार करो।।
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।8।।

ॐ ह्रीं निर्जर कूटत: श्री मुनिसुव्रत नाथ जिनेन्द्रादि निन्यानवे कोड़ाकोड़ी सत्तानवे करोड़ नौ लाख नौ सौ निन्यानवे मुनि सिद्ध पद प्राप्त श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलय:

दोहा – **तीर्थराज को पूजने, भरकर लाए थाल।**
पुष्पाञ्जलि अर्पित विशद, करते हैं नत भाल।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

ललित कूट (श्री चन्द्रप्रभु भगवान)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा – **ललित कूट है श्रेष्ठ, जिसकी पूजा हम करें।**
पाए धर्म यथेष्ठ, चन्द्रप्रभु जिनदेव जी।।

हे चन्द्रप्रभो ! हे चन्द्रानन !, महिमा महान् मंगलकारी।
तुम चिदानंद आनंद कंद, दु:ख द्वंद फंद संकटहारी।।
हे वीतराग ! जिनराज परम, हे परमेश्वर ! जग के त्राता।
हे मोक्ष महल के अधिनायक !, हे स्वर्ग मोक्ष सुख के दाता !।।
मेरे मन के इस मंदिर में, हे नाथ ! कृपाकर आ जाओ।
हम पूजन करते भाव सहित, मुझको सद्राह दिखा जाओ।।
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।1।।

ॐ ह्रीं श्री ललित कूटतः श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्रादि नौ सौ चौरासी अरब बहत्तर करोड़ अस्सी लाख चौरासी हजार पांच सौ पन्चानवे मुनि सिद्ध पद प्राप्त श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युतवर कूट (श्री शीतलनाथ भगवान)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा – शीतलनाथ जिनेन्द्र, मुक्त हुए संसार से।
आये इन्द्र नरेन्द्र,पूजा करने के लिए।।

विद्युतवर है कूट निराला, अतिशयकारी महिमावाला।
शीतलनाथ हुए त्रिपुरारी, तीन लोक में मंगलकारी।।
प्रभु हुए मंगलकार जग में, ज्ञान के धारी परम।
हैं विश्व में अनुपम मनोहर, लक्ष्य प्रभु पाए चरम।।
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो।।
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।2।।

ॐ ह्रीं श्री विद्युतवर कूटत: श्री शीतलनाथ जिनेन्द्रादि अठारह कोड़ा कोड़ी ब्यालीस करोड़ बत्तीस लाख ब्यालीस हजार नौ सौ पांच मुनि सिद्ध पद प्राप्त श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वयंभू कूट (श्री अनंतनाथ भगवान)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा – मोक्ष गए तीर्थेश, श्री अनंत जिनवर परम।
दिए परम उपदेश, मोक्ष मार्ग जिनधर्म का।।

कूट स्वयंभू है मनहारी, जिन तीर्थों में अतिशयकारी।
बैठ वहाँ प्रभु ध्यान लगाए, वह भी मुक्ति वधु को पाए।
पाए स्वयं वह मोक्ष लक्ष्मी, शिवपुरी में वास हो।
हम भावना भाते सभी का, धर्म में विश्वास हो।।
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो।।
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।3।।

ॐ ह्रीं स्वयंप्रभ कूटत: श्री अनंतनाथ जिनेन्द्रादि छियानवे कोड़ाकोड़ी सत्तर करोड़ सत्तर लाख सत्तर हजार सात सौ मुनि सिद्ध पद प्राप्त श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल कूट (श्री संभवनाथ भगवान)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा – संभवनाथ जिनेन्द्र, मोक्ष महल में जा बसे।
आये तब शत् इन्द्र, पूजन करने प्रभु की।।

धवल कूट से मोक्ष पधारे, अपने कर्म नाश कर सारे।
शत् इन्द्रों ने चरणों आकर, भक्ति गान किया है मनहर।।
करके सुभक्तिगान प्रभु की, चरण का वंदन किया।
लेकर मनोहर द्रव्य आठों, भाव से अर्चन किया।।

हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो।।
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।4।।

ॐ ह्रीं धवल कूटत: श्री संभवनाथ जिनेन्द्रादि नौ कोड़ा कोड़ी बहत्तर लाख ब्यालीस हजार पांच सौ मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्य: श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आनंद कूट (श्री अभिनंदन नाथ भगवान)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा – **आनंद कूट महान्, अभिनंदन जिनराज की।**
बंदर है पहिचान, अतिशय जिन का है बड़ा।।

श्री जिनेन्द्र का वंदन करते, अपनी कर्म कालिमा हरते ।
जागे अब सौभाग्य हमारा, मिले चरण का मुझे सहारा ।।
मिल जाए हमको नाथ पावन, चरण की अनुपम शरण ।
हम भक्ति से करते हैं भगवन्, चरण में शत्-शत् नमन् ।।
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो।।
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।5।।

ॐ ह्रीं आनंद कूटत: श्री अभिनंदन जिनेन्द्रादि बहत्तर कोड़ा-कोड़ी सत्तर करोड़ सत्तर लाख ब्यालीस हजार सात सौ मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्य: श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुदत्त कूट (श्री धर्मनाथ भगवान)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा – **कूट सुदत्त महान्, अतिशय कारी तीर्थ पर।**
धर्मनाथ भगवान, मोक्ष गये हैं जहाँ से ।।

प्रभु ने धर्म ध्वजा फहराई, अनुक्रम से फिर मुक्ति पाई।
अष्ट कर्म का किया सफाया, केवल ज्ञान की है यह माया।।
माया कही यह ज्ञान की, जिसने जगाया है परम।
वह नाश करके भव दु:खों का, लक्ष्य पाया है चरम।।
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो।।
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।6।।

ॐ ह्रीं सुदत्तवर कूटत: श्री धर्मनाथ जिनेन्द्रादि उन्तीस कोड़ा कोड़ी उन्नीस करोड़ नौ लाख नौ हजार सात सौ पन्चानवे मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्य: श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अविचल कूट (श्री सुमतिनाथ भगवान)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा – **सुमति नाथ भगवान, कूट सु अविचल से प्रभु।**
पाए मोक्ष महान्, अष्टम भू पर जा बसे ।।

इन्द्र देव गण सब मिल आए, सुमतिनाथ को पूज रचाए।
भाव सहित भक्ति की भारी, चरणों झुके सभी नर-नारी।।
झुककर सभी नर-नार प्रभु की, वंदना को भाव से।
शुभ थाल में ले द्रव्य आठों, गीत गाते चाव से।।
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो।।
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।7।।

ॐ ह्रीं अविचल कूटत: श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्रादि एक कोड़ा कोड़ी चौरासी करोड़ बहत्तर लाख इक्यासी हजार सात सौ इक्यासी मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्य: श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंदप्रभु कूट (श्री शांतिनाथ भगवान)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा – **कूट कुन्दप्रभ जान, शांतिनाथ भगवान की।**
मोक्ष गये भगवान, कर्मनाश कर जहाँ से।।

शांतिनाथ शांति के दाता, तीन लोक में आप विधाता।
प्रभु हैं जन-जन के उपकारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी।।
सारे जहाँ में आप मंगल, कर रहे सद्धर्म से।
पुण्य का संचय करें, प्राणी सभी सत्कर्म से।।
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो।।
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।8।।

ॐ ह्रीं कुंदप्रभ कूटत: श्री शांतिनाथ जिनेन्द्रादि नौ कोड़ा कोड़ी नौ लाख नौ हजार नौ सौ निन्यानवे मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्य: श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभास कूट (श्री सुपार्श्वनाथ भगवान)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा – **पावन कूट प्रभास, जिन सुपार्श्व का जानिए।**
पाए मुक्तिवास, योग रोध करके सभी।।

जन्म बनारस नगरी पाया, हरित रंग थी जिनकी काया।
मन में जब वैराग्य समाया, छोड़ चले सब जग की माया।।
माया जगत् में कर्म का, बंधन कराती है अरे।
यह कर्म उसको न बंधे, जो धर्म का पालन करे।।
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम 'विशद' मम्, आत्म का उद्धार हो।।
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।9।।

ॐ ह्रीं प्रभास कूटत: श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्रादि उन्चास कोड़ा कोड़ी चौरासी करोड़ बहत्तर लाख सात हजार सात सौ ब्यालीस मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्य: श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुवीर कूट (श्री विमलनाथ भगवान)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा – **कूट सुवीर महान्, कहते संकुल कूट भी।**
विमलनाथ भगवान, मोक्ष महल में जा बसे।।

विमलनाथ से नाथ नहीं हैं, सर्व लोक में और कहीं हैं।
चरण शरण में जो भी आया, उसने ही सौभाग्य जगाया।।
सौभाग्यशाली वह जहाँ में, प्रभु का वंदन करें।
ले द्रव्य आठों भाव से जिन, चरण का अर्चन करें।।
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो।।
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।10।।

ॐ ह्रीं सुवीर कूटत: श्री विमलनाथ जिनेन्द्रादि सत्तर कोड़ा कोड़ी साठ लाख छह हजार सात सौ ब्यालीस मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्य: श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धवर कूट (श्री अजितनाथ भगवान)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा – **कूट सिद्धवर जान, अजितनाथ भगवान का।**
इन्द्र किए गुणगान, पाया था निर्वाण जब।।

अजितनाथ का साथ मिला है, तब से जीवन चमन खिला है।
श्रद्धा का उपवन महका है, संयम से जीवन चहका है।।
चहका है जीवन विशद संयम, के बढ़े हम मार्ग पर।
शुभ जिंदगी की हर घड़ी अरु, सार्थक हो श्वास हर।
हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो।।
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।11।।

ॐ ह्रीं सिद्धवर कूटत: श्री अजितनाथ जिनेन्द्रादि एक अरब अस्सी करोड़ चौवन लाख मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्य: श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णभद्र कूट (श्री पार्श्वनाथ भगवान)

श्री सम्मेद शिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा – **कमठ किया उपसर्ग, बैर जानकर पूर्व का।**
पाए जिन अपवर्ग, कर्म नाशकर ध्यान से।।

पावन तीर्थराज है भूपर, गिरि सम्मेद शिखर के ऊपर।
सबसे ऊँची टोंक रही है, महिमा जिसकी अगम कही है।।
महिमा अगम है जिन प्रभु की, तीर्थ की भी जानिए।
जो दु:खहर्ता सौख्यकर्त्ता, मोक्षदायी मानिए।।

हम शरण में आए प्रभु, यह वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो।।
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।12।।

ॐ ह्रीं स्वर्णभद्र कूटत: श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रादि मुनि ब्यासी करोड़ चौरासी लाख पैतालीस हजार सात सौ ब्यालीस मुनि सिद्ध पद प्राप्तेभ्य: श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर सहित पूर्णार्घ

श्री सम्मेदशिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
उस धरती अंबर की जय हो, दुखहारी गिरवर की जय हो।।

सोरठा – **चौबिस जिन तीर्थेश, के गणधर चौबीस हैं।**
दिए जगत् उपदेश, दिव्यध्वनि झेली प्रभो।।

आदिनाथ आदी जिन गाए, वृषभसेन गणधर कहलाए।
अंतिम महावीर को जानो, गणधर गौतम को पहिचानो।।
पहिचानिए गणधर श्री, जिनदेव के संसार में।
अर्पित करूँ हे नाथ ! क्या मैं, आपको उपहार में।।
हम शरण में आए प्रभु मम्, वंदना स्वीकार हो।
है भावना अंतिम विशद मम्, आत्म का उद्धार हो।।
चलो-चलो रे-2 सभी नर नार, तीर्थ के दर्शन को।
कटते हैं कर्म अपार, चलो रे भाई वंदन को।।13।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थंकर सहित श्री गौतम स्वामी आदि गणधर देवग्राम के उद्यान से आदि भिन्न-भिन्न स्थानों से मोक्ष पधारे हैं तिनके चरणारविंद को मेरा मन वचन काय से अत्यंत भक्तिभाव से बारंबार नमस्कार हो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप – ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्रेभ्यो नम:।

समुच्चय जयमाला

दोहा – सम्मेदाचल तीर्थ अरू, तीर्थक्षेत्र निर्वाण।
जयमाला गाते विशद, जिनकी यहाँ महान।।

कण–कण पावन जिसका सारा, मंगलमय है तीर्थ हमारा।
श्री सम्मेद शिखर है प्यारा, सब मिलकर बोलो जयकारा।।
सब मिल दर्शन करवा जी, भाव से वंदन करवा जी।
यह अनादि है तीर्थ जहाँ पर, मोक्ष गये है बीस जिनेश्वर।
संख्यातीत यहाँ से मुनिवर, मुक्ती पाए कर्म नाशकर।
जन्म मरण से हो छुटकारा, सब मिल ...।।
जो भी वंदन करने जाते, भूत प्रेत उनसे घबड़ाते।
मन वांछित फल प्राणी पाते, उनके सब संकट कट जाते।
अशुभ गति न होय दुबारा, सब मिल ...।।
भव्यों को दर्शन मिलते हैं, जीवन के उपवन खिलते हैं।
भाव सहित वंदन करते हैं, चरणों का अर्चन करते हैं।।
पाप मिटे वंदन के द्वारा, सब मिल ...।।
सुर नर मुनि गणधर भी आते,अपना सद सौभाग्य जगाते।
सिद्ध क्षेत्र पर ध्यान लगाते, सर्व सिद्धियाँ वह पा जाते।।
गूँजे जैन धर्म का नारा, सब मिल ...।।
सिद्ध सुखों के सुर अभिलाषी, जिनकी चिर आकांक्षा प्यासी।
बिखरी छटा जहाँ मनहारी, जीवों को हैं मंगलकारी।।
वातावरण सुखद है सारा, सब मिल ...।।
संयम का सौभाग्य जगाते, मानव सकल व्रतों को पाते।
निज आतम का ध्यान लगाते, श्रावक श्रद्धा ज्ञान जगाते।
भव सागर से हो निस्तारा, सब मिल ...।।
आओ मिलकर सब जन आओ, वंदन करके पुण्य कमाओ।
जिन सिद्धों को हम सब ध्याएँ, हम भी सिद्ध स्वयं बन जाएँ।।
नहीं और है कोई चारा, सब मिल ...।।

इन्द्र देव ने स्वयं उतरकर, चरण उकेरे हैं पर्वत पर।
अतिशयकारी पुण्य कमाया, जिनकी महिमा को दिखलाया।।
महिमा प्रभु की अपरंपारा, सब मिल ...।।
जो यात्री वंदन को आते, त्याग हेतु प्रेरित हो जाते।
पद चिन्हों का वंदन पाते, अपने सारे दोष नशाते।।
मंगलमय जीवन हो सारा, सब मिल ...।।
कल–कल बहता शीतल नाला, अतिशयकारी महिमा वाला।
चारों तरफ रहे हरियाली, वायु चलती है मतवाली।।
भक्त बोलते हैं जयकारा, सब मिल ...।।
सांवलिया पारस की जय हो, सारे कर्मों का भी क्षय हो।
डोली वाले देते नारे, बोल रहे हैं जय–जयकारे।।
गूंज रहा है पर्वत सारा, सब मिल ...।।
चौबिस तीर्थंकर की जय हो, जैन धर्म परिकर की जय हो।
दुखहारी गिरवर की जय हो, श्री सम्मेद शिखर की जय हो।।
मुक्ति पाना लक्ष्य हमारा, सब मिल ...।।
आदिनाथ अष्टापद जानो, वासुपूज्य चम्पापुर मानो।
नेमिनाथ गिरनार सिधाएं, वीर प्रभु पावापुर गाए।।
मोक्ष महल पाए हैं प्यारा, सब मिल ...।।

(छंद–घत्तानंद)

है पूज्य हमारा, पर्वत सारा, सम्मेदाचल तीर्थ महा।
कण–कण है पावन अतिमन भावन, हम पूज रहे हैं नाथ अहा।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्योऽनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

रज कण पूजें देव नर, भक्तिभाव के साथ।
भव्य भावना से 'विशद', झुका रहे हैं माथ।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

श्री विराग के बाग से, आए श्रेष्ठ बहार।
'विशद' जीव करते सभी, गुरु की जय–जयकार।।

निर्वाण क्षेत्र की आरती

करूँ आरती तीर्थराज की, भव तारक पावन जहाज की।
तीर्थंकर जिनवर गणधर की, अगणित मुक्त हुए मुनिवर की।।
करूँ आरती ...।।1।।
भव-भव के दु:ख मैटनहारी, बनते प्राणी संयमधारी।
तीर्थराज है मंगलकारी, जिसकी महिमा जग से न्यारी।।
करूँ आरती ...।।2।।
अष्टापद में आदि नाथ की, गिरनारी पर नेमिनाथ की।
चम्पापुर में वासुपूज्य की, पावापुर में वीर नाथ की।।
करूँ आरती ...।।3।।
ज्ञान कूट पर कुन्थुनाथ की, मित्र कूट पर नमीनाथ की।
नाट्य कूट पर अरहनाथ की, संवल कूट पर मल्लिनाथ की।।
करूँ आरती ...।।4।।
संकुल कूट पर श्री श्रेयांस की, सुप्रभ कूट पर पुष्पदंत की।
मोहन कूट पर पद्मप्रभु की, निर्जर कूट पर मुनिसुव्रत की।।
करूँ आरती ...।।5।।
ललित कूट पर चन्द्र प्रभु की, विद्युत कूट पर शीतल जिन की।
कूट स्वयंभू श्री अनंत की, धवल कूट पर संभव जिन की।।
करूँ आरती ...।।6।।
कूट सुदत्त पर धर्मनाथ की, आनंद कूट पर अभिनंदन की।
अविचल कूट पर सुमतिनाथ की, शांति कूट पर शांतिनाथ की।।
करूँ आरती ...।।7।।
कूट प्रभास पर श्री सुपार्श्व की, अरु सुवीर पर विमलनाथ की।
सिद्ध कूट पर अजितनाथ की, स्वर्णभद्र पर पार्श्वनाथ की।।
करूँ आरती ...।।8।।
चरण कमल में श्री जिनवर की, दिव्य दीप से सूर्य प्रखर की।
'विशद' भाव से श्री गिरवर की, सिद्ध क्षेत्र जो है उन हर की।।
करूँ आरती ...।।9।।

प्रशस्ति

सर्व लोक के मध्य है, जम्बूद्वीप महान्।
महिमा जिसकी अगम है, कौन करे गुणगान।।1।।
दक्षिण में जिसके रहा, भरत क्षेत्र विख्यात।
छह खण्डों से युक्त है, कर्म भूमि हो ज्ञात।।2।।
सुषमा-सुषमा आदि छह, होते जिसमें काल।
जिसके चौथे काल में, जिनवर होंय त्रिकाल।।3।।
चौबिस तीर्थंकर सदा, क्रमश: होते सिद्ध।
तीर्थक्षेत्र सम्मेद गिरि, जग में रहा प्रसिद्ध।।4।।
वर्तमान अवसर्पिणी, का यह चौथा काल।
बीस जिनेश्वर तीर्थ से, मुक्ति पाए त्रिकाल।।5।।
मेरुदण्ड से इन्द्र ने, चिन्ह उकेरे श्रेष्ठ।
अतिशयकारी लोक में, मंगल बने यथेष्ठ।।6।।
कण-कण पावन तीर्थ का, मुक्ति पाए ऋषीश।
सिद्ध शिला के जो बने, विस्मयकारी ईश।।7।।
भाव वंदना हेतु यह, रचना हुई महान्।
लघु शब्द में किया है, भाव सहित गुणगान।।8।।
पच्चीस सौ चौतीस यह, रहा वीर निर्वाण।
चैत शुक्ल की पञ्चमी, को यह रचा विधान।।9।।
प्रतापनगर का पाँचवा, सेक्टर रहा महान्।
मूलनायक हैं जहाँ पर, महावीर भगवान।।10।।
नवरात्रा के पर्व पर, नवग्रह शांति विधान।
भाव सहित मिलकर किया, सबने सह सम्मान।।11।।
इस अवसर पर पूर्ण कर, लेखन का यह कार्य।
पढ़कर रचना लाभ लें, 'विशद' जगत जन आर्य।।12।।
लघु शब्दों में यह किया, गिरिवर का गुणगान।
भूल चूक को भूलकर, शोध पढ़े धीमान्।।13।।

श्री सम्मेदशिखर चालीसा

दोहा– शाश्वत तीरथराज है, शिखर सम्मेद महान्।
चालीसा गाते यहाँ, पाने पद निर्वाण।।

(चौपाई)

शाश्वत तीर्थराज शुभकारी, गिरि सम्मेद शिखर मनहारी।।1।।
कण कण पावन जिसका पाया, मुनियों ने जहाँ ध्यान लगाया।।2।।
हर युग के तीर्थंकर आते, मुक्तिवधू को यहाँ से पाते।।3।।
कालदोष के कारण जानो, इस युग का अन्तर पहिचानो।।4।।
बीस जिनेश्वर यहाँ पे आए, गिरि सम्मेद से मुक्ती पाए।।5।।
इन्द्रराज स्वर्गों से आए, रत्न कांकिणी साथ में लाए।।6।।
चरण उकेरे जिन के भाई, जिनकी महिमा है सुखदायी।।7।।
प्रथम टोंक गणधर की जानो, चौबिस चरण बने शुभ मानो।।8।।
द्वितिय कूट ज्ञानधर भाई, कुन्थुनाथ जिनवर की गाई।।9।।
कूट मित्रधर नमि जिन पाए, कर्म नाश कर मोक्ष सिधाए।।10।।
नाटककूट रही मनहारी, अरहनाथ की मंगलकारी।।11।।
संबलकूट की महिमा गाते, मल्लिनाथ जहाँ पूजे जाते।।12।।
संकुल कूट श्रेष्ठ कहलाए, श्री श्रेयांस मुक्ती पद पाए।।13।।
सुप्रभ कूट की महिमा न्यारी, पुष्पदंत जिन की मनहारी।।14।।
मोहन कूट पद्म प्रभु पाए, जन-जन के मन को जो भाए।।15।।
पूज्य कूट निर्जर फिर आए, मुनिसुव्रत जी शिवपद पाए।।16।।
ललितकूट चन्द्रप्रभु स्वामी, हुए यहाँ से अन्तर्यामी।।17।।
विद्युतवर है कूट निराली, शीतल जिन की महिमा शाली।।18।।
कूट स्वयंप्रभ आगे आए, जिन अनन्त की महिमा गाए।।19।।
धवलकूट फिर आगे जानो, संभव जिन की जो पहिचानो।।20।।
आनन्द कूट पे बन्दर आते, अभिनन्दन जिन के गुण गाते।।21।।
कूट सुदत्त श्रेष्ठ शुभ गाते, धर्मनाथ जिन पूजे जाते।।22।।

अविचल कूट पे प्राणी जाते, सुमतिनाथ पद पूज रचाते।।23।।
कुन्दकूट पर प्राणी सारे, शान्तिनाथ पद चिह्न पखारे।।24।।
कूट प्रभास है महिमा शाली, जिन सुपार्श्व पद चिह्नों वाली।।25।।
कूट सुवीर पे जो भी जाए, विमलनाथ पद दर्शन पाए।।26।।
सिद्धकूट पर सुर-नर आते, अजितनाथ पद शीश झुकाते।।27।।
कूट स्वर्णप्रभ मंगलकारी, पार्श्वप्रभु का है मनहारी।।28।।
दूर-दूर से श्रावक आते, शुद्ध भाव से महिमा गाते।।29।।
नंगे पैरों चढ़ते जाते, प्रभु के पद में ध्यान लगाते।।30।।
भाँति-भाँति की भजनावलियाँ, वीतराग भावों की कलियाँ।।31।।
पुण्यवान ही दर्शन पावें, नरक पशू गति बंध नशावें।।32।।
तीर्थ वन्दना करने जावें, कर्मों के बन्धन कट जावें।।33।।
भूले को भी राह दिखावें, दुखियों के सब दुःख मिटावें।।34।।
कभी स्वान बन कर आ जाते, डोली वाले बनकर आते।।35।।
गिरि की महिमा यह जग गाए, सूर्य चाँद महिमा दिखलाए।।36।।
सन्त मुनि अर्हन्त निराले, शिव पदवी को पाने वाले।।37।।
तुमरी धूल लगाकर माथें, भाव सहित तव गाथा गाते।।38।।
हमको मुक्ती मार्ग दिखाओ, जन्म मरण से मुक्ति दिलाओ।।39।।
सेवक बनकर के हम आए, पद में सादर शीश झुकाए।।40।।

दोहा– 'विशद' भाव से जो पढ़े, चालीसा चालीस।
सुख-शांती पावे अतुल, बने श्री का ईश।।
महिमा शिखर सम्मेद की, गाएँ मंगलकार।
उसी तीर्थ से ही स्वयं, पावे मुक्ती द्वार।।

जाप- (1) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्रेभ्यो नमः। (2) ॐ ह्रीं श्री अनंतानंत तीर्थंकर निर्वाण भूमि सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो नमः।

प.पू. 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

(स्थापना)

पुण्य उदय से हे ! गुरुवर, दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
श्री गुरुवर के दर्शन करके, हृदय कमल खिल जाते हैं॥
गुरु आराध्य हम आराधक, करते उर से अभिवादन।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वानन्॥

ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(ताटंक छंद)

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।
रागद्वेष की वैतरणी से, अब तक पार न पाया है॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।
भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैं॥1॥

ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।
कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।
संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैं॥ 2॥

ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं।
अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैं॥ 3॥

ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती है॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।
काम बाण विध्वंश होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैं॥ 4॥

ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

काल अनादि से हे गुरुवर ! क्षुधा से बहुत सताये हैं।
खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुन्दर लाये हैं।
क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की ! क्षुधा मेटने आये हैं॥ 5॥

ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह तिमिर में फंसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना।
विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछताना॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं।
मोह अंध का नाश करो, मम् दीप जलाने आये हैं॥ 6॥

ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था।
पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना था॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने आये हैं।
आठों कर्म नशाने हेतु, गुरु चरणों में आये हैं॥ 7॥

ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इत्यादि फल लाये हैं।
पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।
मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैं॥ 8॥

ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर ! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं॥ 9॥

ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल।
मन-वच-तन से गुरु की, करते हैं जयमाल॥

(चौबोला छंद)

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण।
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कण॥

छतरपुर के कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थी॥
बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े।
ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़े॥
आठ फरवरी सन् छियानवे को, गुरुवर से संयम पाया।
मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षाया॥
पद आचार्य प्रतिष्ठा का शुभ, दो हजार सन् पाँच रहा।
तेरह फरवरी बसंत पंचमी, बने गुरु आचार्य अहा।।
तुम हो कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।
निकल पड़े बस इसलिए, भवि जीवों की जड़ता हरते॥
मंद मधुर मुस्कान तुम्हारे, चेहरे पर बिखरी रहती।
तव वाणी अनुपम न्यारी है, करुणा की शुभ धारा बहती है॥
तुममें कोई मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है।
है वेश दिगम्बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना है॥
हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना।
हम पूजन स्तुति क्या जाने, बस गुरु भक्ति में रम जाना॥
गुरु तुम्हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता।
हम रहें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साता॥
सुख साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें।
श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, मन-वच-तन अनुराग करें॥
गुरु गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्व दोष का नाश करें।
हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करें॥

ॐ ह्रूँ आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान।
मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखान॥

इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्) **ब्र. आस्था दीदी**

कृति – श्री तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र सम्मेद शिखर विधान

कृतिकार – परम पूज्य साहित्यरत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज

संस्करण – पंचम 2022

प्रतियाँ – 1000

संकलन – मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज

सहयोग – आर्यिका श्री भक्तिभारती, क्षुल्लिका श्री वात्सल्य भारती

संपादन – ब्र.ज्योतिदीदी(9829076085),आस्था दीदी 9660996425 , सपना दीदी 9829127533, आरती दीदी 87010876822, प्रदीप भैया 7568840873 7568840873

प्राप्ति स्थल – 1. श्री दिगंबर जैन मंदिर रोहणी से. 3
9810570747

2. सुरेश सेठी पी शांतिनगर जयपुर
9413336017

3. विशद साहित्य केन्द्र
C/o श्री दिगम्बर जैन मंदिर कुआँ वाला जैनपुरी
रेवाड़ी (हरियाणा) प्रधान–09812502062

मूल्य – पुनः प्रकाशन हेतु 21/– रु. मात्र

अर्थ सौजन्य :–

स्मृति शेष

मातु श्री त्रिशलादेवी जैन एवं सुपुत्र प्रमोद कुमार जैन की स्मृति में अभय कुमार जैन नौगांव वालों की सम्मेद शिखर जी की108 वंदना के उपलक्ष्य में भेंट

दादी-कस्तूरी बाई,चाची-कपूरी जैन,पिता-प्रेमचंद्र जैन,चाचा-अजितकुमार-सरोज जैन भाभी- संगीता जैन,अभयकुमार-अर्चना जैन,भाई- मनोज-मोहनी, अल्पेष-संजोत,अभिषेक-नेहा,सुनील,विनोद,प्रथम,प्रबल,प्रभाव,रुचि,रूही,सूजल,आर्यन एवं समस्त पटवारी परिवार नौगांव जिला छतरपुर म.प्र.

श्री सम्मेद शिखर विधान